श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्रीकृष्ण जी, अनादि अछरातीत।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।

प्रकास हिन्दुस्तानी–जंबूर

कछु इन विध कियो रास, खेल फिरे घर।
खेल देखन के कारने, आइयां उमेदां कर।। १ ।।

इस तरह से रास खेलने के बाद श्री राजजी और हम सब परमधाम गए। इच्छा पूरी नहीं हुई थी, इसलिए दुबारा खेल देखने की इच्छा लेकर आए।

उमेदां न हुइयां पूरन, धाख मन में रही।
तब धनीजीऐं अंतरगत, हुकम कियो सही।। २ ।।

हमारी चाहना पूरी नहीं हुई थी, इच्छा मन में रह गई थी। इसलिए धाम धनी ने हुकम करके यह ब्रह्माण्ड बनवाया।

तब तीसरो रचके खेल, स्यामाजी आए इत।
तब हम भी आइयां तित, स्यामाजी खेले जित।। ३ ।।

अब यह तीसरा खेल रच करके (बनाकर) श्यामाजी यहां आईं। तब हम भी लीला करने के वास्ते साथ में आए।

स्यामाजी को धनिऐं, आवेस अपनो दियो।
सब केहे के हकीकत, हुकम ऐसो कियो।। ४ ।।

श्यामाजी को श्री राजजी महाराज ने अपना आवेश दिया और श्यामजी के मन्दिर में श्री देवचन्द्रजी को (न्यामत दी) घर की, बृज की तथा रास की पूरी हकीकत विस्तार से समझाई। खेल में सुन्दरसाथ आया हुआ है, उनको जगाकर घर वापस लाना है ऐसा हुकम श्री राजजी ने दिया।

इंद्रावती लागे पाए, सुनो प्यारे साथ जी।
तुम चेतो इन अवसर, आयो है हाथ जी।। ५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी चरणों में प्रणाम कर कहती हैं कि मेरे प्यारे सुन्दरसाथ! सुनो, तुम जागो (अपने होश में आओ)। यह अवसर तुम्हारे हाथ आया है।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ५ ।।

साथ को सिखापन–राग धनाश्री

याद करो तुम साथ जी, हाथ आयो अवसर जी।
आप डारया ज्यों पेहेले फेरे, भी डारियो निसंक फेर जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारे हाथ मौका आया है। अब तुम याद करो कि बृज में पहली बार हम आए थे और बृज को छोड़कर रास में बिना कोई देरी किए गए थे। इस बार भी वैसे ही माया को छोड़ देना।

Nijanand App

सुंदरबाई इन फेरे, आए हैं साथ कारन जी।
भेजे धनिऐं आवेस देय के, अब न्यारे न होऐं एक खिन जी।। २ ।।

सुन्दरबाई (श्यामाजी) इस बार सुन्दरसाथ के वास्ते आई हैं। इनको धनी ने अपने आवेश की शक्ति देकर भेजा है। वह हम से एक क्षण के लिए भी अलग नहीं होंगी।

सुपने में भी खिन ना छोड़ें, तो क्यों छोड़ें साख्यात जी।
दया देखो पिउजी की हिरदे मांहें, विध विधकी विख्यात जी।। ३ ।।

सपने में भी (बृज में) हमको नहीं छोड़ा। यहां इस खेल (जागनी के ब्रह्माण्ड में) उजाले में साक्षात् आए हैं, तो कैसे छोड़ेंगे? अपने दिल में धनी की मेहर, जो समय-समय पर तरह-तरह से करते हैं, को देखो।

ऐसी बात करे रे पिउजी, पर ना कछू साथ को सुध जी।
नींद उड़ाए जो देखिए आपन, तो आए हैं आप ले निध जी।। ४ ।।

धनी ऐसी कृपा करते हैं पर सुन्दरसाथ को कुछ भी होश नहीं है। अज्ञानता का पर्दा उड़ा कर देखें, तो धनी अपने लिए जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर आए हैं।

सुपने में मनोरथ किए, तो तित भी पिउजी साथ जी।
सुन्दरबाई ले आवेस धनी को, न छोड़े अपना हाथ जी।। ५ ।।

बृज में पिया साथ थे और अपनी समस्त चाहना पूरी की। अब श्यामाजी धनी का आवेश लेकर आई हैं और वह हमारा हाथ नहीं छोड़ेंगी।

धनी न देवें दुख तिल जेता, जो देखिए वचन विचारी जी।
दुख आपनको तो जो होत है, जो माया करत हैं भारी जी।। ६ ।।

इन वचनों को विचार करके देखो तो धनी कभी भी एक तिल जितना दुःख भी नहीं देते। दुःख तो हमको तब होता है जब हम माया को पकड़ते हैं।

अंतरध्यान समें दुख दिए, ए आसंका उपजत जी।
तिन समें संसार न किया भारी, साथें दुख देखे क्यों तित जी।। ७ ।।

एक संशय मन में होता है कि रास में अन्तर्ध्यान हुए तो विरह का दुःख हमको क्यों दिया? उस समय तो हमने संसार नहीं पकड़ा था, तो सुन्दरसाथ ने वहां दुःख क्यों देखे?

दुख तो क्यों ए न देवे रे पिउजी, ए विचार के संसे खोइए जी।
ए याद वचन तो आवे रे सखियो, जो माया छोड़ते घनों रोइए जी।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, कि दुःख तो पियाजी किसी तरह से देते ही नहीं हैं। तुम जरा सोचकर अपने संशय मिटाओ। यह वचन तो तब याद आते हैं जब हम माया छोड़ते समय बहुत दुःखी होते हैं।

खेल याद देने को मेरे पिउजी, दुख दिए अति घनेंजी।
साथें मनोरथ एह जो किए, धनिऐं राखे मन आपनें जी।। ९ ।।

हम सुन्दरसाथ ने परमधाम में चाहत की थी कि हमें दुःख का खेल दिखाओ, तो श्री राजजी ने वह बात अपने मन में लेकर रास में अन्तर्ध्यान होकर हमको दुःख देकर अपनी मांगी हुई बात को याद कराया।

Nijanand App

आपन माया की होंस जो करी, और माया तो दुख निधान जी।
सो याद देने को रे साथजी, पिउ भए अन्तरध्यानजी।। १० ।।

हमने परमधाम में माया की चाहना की थी। माया तो दुःख का घर है। उसी की चाहना की याद दिलाने के लिए पियाजी अन्तर्ध्यान हुए।

नातो ए अपना रे पिउजी, अधखिन बिछोहा न सहे जी।
एह विचार जो देखिए साथजी, तो तारतम प्रगट कहे जी।। ११ ।।

नहीं तो यह हमारे धनी हैं। यह आधे क्षण का हमारे से बिछुड़ना सहन नहीं कर सकते। विचार कर हम यह देखें तो तारतम से साफ-साफ पहचान होती है।

इन समे तारतम की समझन, क्योंकर कहिए सोए जी।
अनेक विध का तारतम इत, तब घर लीला प्रगट होए जी।। १२ ।।

इस समय तारतम को ही समझना है। मैं कैसे कहूं? क्योंकि संसार में अनेक प्रकार के ज्ञान हैं जो घर का ज्ञान तो देते हैं, पर सब संसार में ही घटा देते हैं, पर तारतम वाणी के बिना घर की पहचान होती नहीं है।

पेहेचानवेको पिउजी अपना, करूं तारतम विचार जी।
साथ सकल तुम लीजो दिल में, न रहे संसे लगार जी।। १३ ।।

अपने धनी की पहचान करने के लिए जागृत बुद्धि के ज्ञान तारतम को ही विचारना होगा। हे सुन्दरसाथजी! यह बात दिल में समझ लेना, ताकि तुम्हारा कोई संशय बाकी न रह जाए।

पेहेली बेर तहां ए निध न हुती, तारतम जोत रोसन जी।
तो ए फेरा हुआ रे साथ को, तुम देखो विचारी मन जी।। १४ ।।

पहली बार बृज में जब आए थे, तब वहां तारतम ज्ञान नहीं था। इसलिए हमें यहां दुबारा आना पड़ा, तुम विचार कर देखो।

आसंका न रहे किसी की, जो कीजे तारतम विचार जी।
सो रोसनाई ले तारतम की, आए आपन में आधार जी।। १५ ।।

यदि तारतम वाणी से विचार कर देखें तो किसी प्रकार का संशय बाकी नहीं रहेगा। उस जागृत बुद्धि के ज्ञान को लेकर खुद धनी हमारे बीच पधारे हैं।

अब इन उजाले जो न पेहेचानो, तो आपन बड़े गुन्हेगार जी।
चरने लाग कहे इंद्रावती, पिउजी के गुन अपार जी।। १६ ।।

इस उजाले में भी यदि हमने धनी को नहीं पहचाना तो फिर कसूर (दोष) हमारा है। श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर कहती हैं कि धनी की मेहर बेशुमार है।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। २१ ।।

राग धनाश्री

साथ सकल तुम याद करो, जिन जाओ वचन विसर जी।
धनी मिले आपन कों माया में, जिन भूलो ए अवसर जी।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! याद करो अपने वचनों को भूलो मत। धनी हमें माया में मिले हैं। अब इस मौके को हाथ से नहीं जाने देना।

Nijanand App